विश्व में हिन्दी भाषा का वर्चस्व

पूनम मियान*

सारांश

भारत में हिन्दी भाषा संपर्क भाषा के रूप में कश्मीर से कन्याकुमारी तक बोली जाती है। प्रतिवर्ष अनेक विद्यार्थी हिन्दी सीखने शोध करने के लिए भारत आते हैं। हिन्दी भाषा के प्रति लोगों का रुझान बढ़ रहा है। यह भारत की राष्ट्रीय अस्मिता की परिचायक है। जिस प्रकार माँ गंगा में अनेक धाराएं प्रवाहित हुई गंगा ने उन्हें एक आकार दिया उसी प्रकार हिन्दी रुपी गंगा में उन्हें असंख्य धाराएं मिलती रहीं उसने उन सभी को सहजतापूर्वक स्वीकार किया और एक नया रूप दिया। हिन्दी परिवर्तनशील भाषा है। आधुनिक वैश्वीकरण के दौर में भारत को सशक्त राष्ट्र बनाने में यह महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। मानवीय हृदय की संवेदनाओं को प्रकट करने का सरल एवं स्वाभाविक माध्यम है।

मुख्य शब्द– हिन्दी, संपर्क भाषा, राष्ट्र भाषा, संस्कृति, वैश्वीकरण।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी अपनी भाषा की अस्मिता से होती है। ऋग्वेद में भाषा को राष्ट्रनिर्मात्री कहा गया है। ''अहं राष्ट्री संगमनी वसूनामु''[1] कहना न होगा कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह सामर्थ्य हिंदी भाषा में ही है। भाषा समाज को जोड़कर रखती है और राष्ट्रभाषा राष्ट्र को। हमारे राष्ट्र को जोड़कर रखने वाली भाषा एकमात्र हिंदी है। इसने कश्मीर से कन्याकुमारी तक सैकड़ों जातियों, धर्मों, समुदायों, पंथों, भाषाओं मातृभाषाओं और बोलियों को जोड़कर भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया है। हिंदी राष्ट्रीय एकता की मजबूत श्रृंखला है। भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है–

''निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय के शूल।।''[2]

हिंदी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ–साथ यह दुनियाभर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिंदी की गरिमा, गौरव, महत्व और महिमा के संदर्भ में जगदीश यादव ने लिखा है कि ''इस हिंदी में जगनिक की हुंकार, अमीर खुसरों की पहेलियाँ, काशी के जुलाहे का ताना–बाना, मीरा के घुंघरुओं की ध्वनि, सूर के इकतारे की ध्वनि है, हिंदी सरोवर है, घनानंद की पीर से, देव के प्रकृति चित्रण से, बिहारी के गागर में सागर भरने की कला से। इतना ही नहीं लेखनी के जादूगर प्रेमचंद, इतिहास और साहित्य के रस के सरोवर वृंदावन लाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री, भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्याम सुंदर दास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंद दुलारे वाजपेयी आदि इतने साहित्यकार हैं, जो हिंदी के शब्दानुशासन से घर, समाज और राष्ट्र के मध्य समन्वय स्थापित करते हैं।''[3] हिंदी अपनी व्यापकता और श्रेष्ठ होने के गुणों से विश्व की भाषा बन चुकी है। आदिकाल से लेकर आज तक ऋषि, मुनि, संत, कवि, लेखक सभी हिंदी भाषा में डूबकर उसके राष्ट्रीय विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा हैः ''भारत की आधुनिक क्रांति के हार के मध्य मणि के रूप में हिंदी भारत भारती होकर विराजती है। हिंदी तो आम आदमी को बांधने का रज्जु है।''[4]

आज पूरी दुनिया में हिन्दी सिनेमा, धारावाहिक और विज्ञापन बहुत अधिक पसंद किए जा रहे हैं। अगर कोई धारावाहिक कुछ समय के लिए बंद किया जाता है तो विदेशों से हज़ारों पत्र आने शुरु हो जाते हैं। रामायण, महाभारत आदि धार्मिक विषयों पर बने धारावाहिकों ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर एक पहचान दी है। श्रीमद्भागवत कथा के प्रसिद्व वाचक देवकीनंदन ठाकुर की वाचन शैली के विदेशी भी कायल हैं। मॉरीशस के राम भक्तों ने पूरी दुनिया में एक मिसाल कायम की है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन कराकर विश्व धरातल पर अपनी खास पहचान बनाई है।

मॉरिशस में भारतीय मजदूरों के आगमन के साथ ही इस भूमि पर हिंदी का भी प्रवेश हुआ। ''हालाकि उन गिरमिटिये मजदूरों में प्रायः भोजपुरी इलाके के थे लेकिन उनके साथ उनकी झोलियों में रामचरितमानस, महाभारत, हनुमान

* बी–502/ए डबल स्टोरी, ब्रिज विहार गाजियाबाद उ0प्र0–201011

खेती के क्रूर नियति से दुःखी और हताश ये मजदूर कभी विरहा गा उठते तो कभी कुटियों में कजरी तो कभी कुछ दिन में हनुमान चालीसा की पंक्तियां उनमें शक्ति का संचार करतीं तो रात में रामचरितमानस का पाठ उनकी थकान को दूर करके आगे के लिए हौसले को बढ़ाता।''[5]

''विश्व हिंदी सम्मेलन के रूप में हिंदी का विश्वव्यापी विराट रूप आकाश में धूमकेतु के समान एक तेजोमय प्रकाश पुंज की भांति प्रकट हुआ जो भारत के सांस्कृतिक जीवन में एक अद्वितीय घटना बनकर रह गया। इस अद्वितीय ऐतिहासिक घटना का क्रम इतनी तेजी से चला कि देखते ही देखते कुछ महीनों में एक स्वप्न की तरह निकल गया, सहस विश्वास नहीं हुआ कि नागपुर में चार दिनों तक सारे भारत और शेष जगत का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने वाला यह सम्मेलन कैसे संभव हो सका।''[6] हिंदी के इस सामर्थ्यवान रूप का वर्णन हमारे संत, बुद्धिजीवी और नेता विश्वमंच पर वर्षों से कर रहे हैं। सर्वप्रथम स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में आयोजित विश्वधर्म सम्मेलन में अपने विचार विश्व के समक्ष हिंद की हिंदी में रखे। इसी क्रम में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी बात हिंदी में कहीः

''गूंजी हिंदी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार।
राष्ट्रसंघ के मंच से, हिंदी की जय–जयकार।।''[7]

''हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी फिल्मों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। देश–विदेश में बहुत से लोगों ने फिल्मों के माध्यम से हिंदी सीखी। हिंदी अच्छी तरह न जानने वाले लोग आपको फिल्मी गाने गुनगुनाते हुए मिल जाएंगे।''[8] भारतीय फिल्में जहां विदेश में दर्शकों का मनोरंजन करती हैं वहीं वे परोक्ष में भाषा भी सिखाती हैं, सांस्कृतिक परिवेश से परिचित कराती हैं और अनजाने में उस देश के प्रति आकर्षण और लगाव भी उत्पन्न करती हैं। राजकपूर की 'आवारा' फिल्म तथा 'हाथी मेरे साथी' ने कितने विदेशियों को हिंदी की ओर आकृष्ट किया यह हम आज अनुमान भी नहीं लगा सकते। 'मेरा जूता है जापानी' हर विदेशी की जबान पर एक समय ऐसा चढ़ा हुआ था कि किसी भारतीय को देखते ही वह यह गाना गाने लगता था। इस गाने का उसने अपनी–अपनी भाषा में अनुवाद भी कर रखा था।

प्रो0 रुपर्ट स्नेल ने हिंदी भाषा की गौरवगाथा का बखान करते हुए लिखा है कि ''मेरे ख्याल से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की ओर से स्वीकृति दी जाय या नहीं, दुनिया में हिंदी भाषी लोगों की संख्या को बढ़ाया जाए या नहीं, किसी हिंदी लेखक को नोबेल पुरस्कार दिया जाए या नहीं, सच पूछिए तो इन सब चीजों से कोई फर्क नहीं पड़ता।''[9] हिंदी की शक्ति इसमें है कि वह अपने में एक महान भाषा है, एक मीठी भाषा है, एक ऐसी भाषा है जिसमें दिल की बातें कही जाती हैं, जिसके माध्यम से मस्तिष्क में गंभीर से गंभीर विचार सोचे जाते हैं, जिसमें धोबी अपने गधे को कोसता है, जिसमें गब्बर सिंह लोगों को डराकर धमकी देता है और फिल्मी नायिकाएं नखरा करती हैं, जिसमें पण्डित, विद्वान, प्रोफेसर लोग दुनिया का मूल्यांकन और विश्लेषण करते हैं, जिसमें होरी और धनिया और गोबर अपना जीवन जीते हैं, जिसमें तुलसीदास लिखते हैं, सूरदास गाते हैं और मीरा प्यार के आँसू रूपी भजन बहाती है, जिसमें भगवान की पूजा की जाती है, जिसमें लोग पैदा होते हैं, जीते हैं, मरते हैं, हिंदी जिंदगी का एक हिस्सा है, हिंदी जिंदा है।

''हिंदी किसी एक वर्ग या वर्ण, जाति या धर्म, मजहब या मार्ग, देश या संस्कृति की नहीं है, हिंदी भारत की है, मॉरिशस की है, इंग्लैण्ड की है, कनाडा की है, सारी दुनिया की है, हिंदी आपकी है, हिंदी मेरी है। हिंदी हम सबकी है।''[10]

''हिंदी आज राष्ट्रभाषा के रूप को पुष्ट कर विश्व की यात्रा पर निकल पड़ी है और अभिभूत कर रही है संपूर्ण विश्व को अपने अद्भुत गुणों और सौन्दर्य से। यह विश्व के फलक पर अब अपना एक नया कीर्तिमान रचने जा रही है। हिंदी ने राष्ट्र के विकास में अपनी भूमिका का निर्वहन पूरी ईमानदारी के साथ किया है इसीलिए यह अब राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।''[11]

''प्रेमचंद्र, जैनेन्द्र, यशपाल, अश्क, अज्ञेय, वृंदावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु आदि रचनाकारों को ही अन्य भाषाओं में अनूदित होने का गौरव मिला है। यह कार्य त्वरित गति और सुनियोजित ढंग से होना चाहिए। इससे हिन्दी साहित्य का गुणात्मक उत्कर्ष होगा और उसका राष्ट्रीय स्वरुप निखरेगा। हिन्दी का चेहरा अब अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है। उसका एक विश्वरुप निर्मित हो रहा है। अब आवश्यकता उसके इस रूप को निखारने और उसे गुणात्मक समृद्धि एवं उत्कर्ष प्रदान करने की है।''[12]

''वैज्ञानिक दृष्टि से भी हिन्दी की लिपि देवनागरी सर्वाधिक सरल तथा तर्कसम्मत है इसमें जो बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है तथा वैसा ही पढ़ा जाता है। वर्ण–विन्यास याद करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। एक बार अच्छी तरह मात्राओं की तथा उच्चारण की जानकारी पर्याप्त है। हिन्दी और हिन्दुस्तान की प्रगति के लिए एक देशव्यापि, भक्तिपूर्ण,

अहिंसक आंदोलन की आवश्यकता है। तभी हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में सही प्रकार से स्थापित हो पाएगी। इसके लिए हम सब भारतीयों को मिलकर आगे आना होगा।''[13]

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि हिंदी धीरे–धीरे ग्लोबल होती जा रही है। विदेशियों में बड़े सम्मान व चाव से हिंदी सीखने की ललक पैदा हुई है। जिससे भारतवासियों के मीठे, सुरीले भावों की लहर पूरे विश्व में फैल रही है।

संदर्भ

1. मिश्र, शचीः हिंदी बचाओ मंच का एक साल, आनंद प्रकाशन, रवीन्द्र सरणी कोलकाता–2018, पृ0 301
2. शर्मा, प्रणव, गोस्वामी, प्रणीताः हिंदी का अस्मिता पर्व मित्तल एंड संस प्रकाशन, पहाड़गंज दिल्ली– 2015, पृ0 101
3. वही, पृ0 121
4. वही, पृ0 121
5. पाना, ऋतु सुरेश, हिंदी सब संसार, गौरव प्रकाशन विवेक विहार, नई दिल्ली, 2008 पृ0 142
6. वही, पृ0 143
7. शर्मा, प्रणव, वही, पृ0 122
8. त्रिपाठी, ब्रजेन्द्रः साहित्य और परिवेश, यश पब्लिकेशंस नवीन शाहदरा, दिल्ली, 2013 पृ0 91
9. केजरीवाल, ओम प्रकाशः विदेश में हिंदी की स्थिति और संभावनाएं नेहरु स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय नई दिल्ली, 2004, पृ0 10
10. पाना, ऋतु सुरेश, वही, पृ0 6
11. शर्मा, प्रणव, वही, पृ0 122
12. तिवारी रामचंद्रः हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी उत्तर प्रदेश, पृ0 1138–1139
13. 'पतंग' मायाराम आचार्यः विद्यालय उत्सव सत्साहित्य प्रकाशन दिल्ली, पृ0 104